हिंदी विवि करेगा विश्व हिंदी समुदाय का नेतृत्व- विभूति नारायण राय

विदेशी हिंदी शिक्षकों के लिए आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम का हुआ समापन

वर्धा, 09 नवम्बर, 2011; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विदेशी हिंदी शिक्षकों के लिए दस दिनों से चल रहे अभिविन्यास (ओरिएंटेशन) कार्यक्रम का समापन आज बुधवार को बड़ी गर्मजोशी के साथ हुआ। जर्मनी, चीन, क्रोएशिया, हंगरी, न्यूजीलैण्ड, इटली, हंगरी,रूस बेल्जियम, श्रीलंका से आये हिंदी शिक्षकों को कुलपति विभूति नारायण राय ने प्रमाणपत्र, स्मृति चिन्ह प्रदान किये।

विवि के हबीब तनवीर सभागार में आयोजित भव्य समापन समारोह समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा देशभर में 40 केंद्रीय विवि और राज्य व डीम्ड विवि कुल मिलाकर करीब 400 है। परंतु हिंदी विवि एकमात्र ऐसा विवि है जो हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में विकसित करने हेतु सथापित हुआ है। इसकी अंतरराष्ट्रीयकरण की दिशा में हम लगातार पहल कर रहे हैं। आने वाले समय में यह विवि विश्वभर के हिंदी समुदाय का नेतृत्व करेगा और विश्वभाषा बनाने में अहम भूमिका निभाएगा। विवि की अवधारणा में निहित है कि कैसे हिंदी ज्ञान-विज्ञान की भाषा बने और वैश्विक पटल पर हिंदी को स्थापित करे सकें। विदेशों में हिंदी पढ़ानेवाले अध्यापकों को हो रही समस्याओं से अवगत होने के लिए हमने अभिविन्यास कार्यक्रम चलाया है ताकि हम उनके बीच एक समन्वय की भूमिका निभा सकें। हम इटली, जर्मनी, बेल्जियम से अनुबंध कर रहें हैं ताकि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तौर पर वहां से विद्यार्थी और अध्यापक आ सकें तथा यहां से भी बाहर के देशों में जाकर हिंदी को वैश्विक फलक पर पहुंचा सके। उन्होंने आशा जतायी कि अगले सेमेस्टर में दुनियाभर के कई देशों से विद्यार्थी यहां अध्ययन करने आएंगे और वे हिंदी को भूमंडलीकृत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे। जर्मनी के राम प्रसाद भट्ट ने प्रस्ताव दिया है कि यूरोप के विद्यार्थी 'लैग्वेज टूर' के नाम पर यहां आकर हिंदी सीखेंगे। उन्होंने कहा कि पाठ्यसामग्री के निर्माण में हमारी कोई भी जरूरत लगे तो आपका स्वागत है, हम आपकी मदद करने को तैयार हैं।

विवि के प्रतिकुलपति व विदेशी शिक्षण प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. अरविंदाक्षन ने कहा कि हम आगे आने वाले समय में वर्ष में दो बार अभिविन्यास कार्यक्रम चलायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि कैसे यह विवि हिंदी के लिए 'इंटरनेशनल हब' के रूप में विकसित हो। इस दौरान प्रो. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस विवि ने अपनी अंतरराष्ट्रीय अवधारणा को साकार किया है। हम आपकी समस्याओं से अवगत हो सके हैं। अंतरराष्ट्रीय फलक पर हिंदी को फैलाने में यह विवि अपनी महती भूमिका अदा करेगा।

विदेशों से आये हिंदी के अध्यापकों ने जब अपनी बात कहनी शुरू की तो सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। कई ने भावुक स्वर में यहां की अतिथि देवो भव की परंपरा को सराहा। पड़ोसी देश श्रीलंका से आये संगीत रत्नायके ने कहा कि यहां के विशेषज्ञों से मिलकर हम शिक्षा के नये आयामों से जुड़ पाये इसका लाभ हमारे विद्यार्थियों को होगा। लघु भारत के रूप मे चर्चित देश मॉरीशस से आयी गीता नथ्थू ने बड़े ही भावुक स्वर में कहा कि मैं यहां से बहुत कुछ लेकर जा रही हूं यहां जो जानकारी हमें मिली है निश्चित रूप से हम नई पीढ़ी को अवगत करा सकेंगे। हंगरी से आयी डॉ. मारिया नेज्यैशी ने कहा कि यह एक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम है। हमारे विवि के साथ यहां से संबंध स्थापित हुए हैं आशा है कि इस संबंध में और भी मजबूती आएगी। इटली की अलेसांद्रा कोसोंलारो ने कहा कि यह मेरे लिए गौरव की बात है, पहले लगा कि रास्ता लंबा है पर हम साथ-साथ चलेंगे हिंदी की सेवा करने में। हमारे विद्यार्थी यहां आयेंगे और यहां से भी विद्यार्थी इटली आयेंगे। न्यूजीलैण्ड की सुनीता नारायण ने कहा कि यहां का एक-एक अनुभव मेरे जिंदगी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। रूस की इंदिरा गाजिएवा ने आशा जताते हुए कहा कि रूस में यहां से वरिष्ठ विद्वान आकर हमारा मार्गदर्शन करेंगे। मैं इंदिरा हूं, मेरे पीछे तो पूरा भारत है। क्रोएशिया की बिल्याना ज़र्निच ने कहा कि यहां के लोग बहुत अच्छे हैं। सभी से मिलने पर एक रोमांचकारी अनुभव रहा मेरे लिए, लगा कि मैं यहां कई वर्षों से रहती आयी हूं। हिंदी भारत की संपर्क भाषा है, इस भाषा के माध्यम से हमारा संपर्क बढ़ा और आशा है कि हमारे देश और भारत के बीच के रिश्ते और भी बेहतर होंगे। मैं एडवांस हिंदी बुक बनाना चाहती हूं। इसबार मैं उसी विचार से आयी और उस किताब की शुरूआत हुई, यह मेरे लिए बेहद खुशी की बात है। बेल्जियम से आयी ईवा डि क्लार्क ने कहा कि हम भविष्य के लिए बहुत कुछ यहां से ले जा रहे हैं। चीन से आये छे जिलुंग ने कहा कि यहां से हमने बहुत कुछ सीखा है। जर्मनी से आये राम प्रसाद भट्ट ने कहा कि हर बार जब हिंदुस्तान आता हूं तो नया सीखता हूं। पहली बार इस विवि में आया था तो वहां जाकर अध्यापन को नए ढंग से कर सका। हिंदी के प्रसार में यह विवि अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। यहां के शिक्षक व विद्यार्थी बाहर जायेंगे तो निश्चित रूप से हिंदी का प्रसार होगा। भारत से जो भी हमारे यहां आना चाहें, उसका तहेदिल स्वागत है। मुझे आशा है कि अगले वर्ष हमारे तीन-चार विद्यार्थी यहां हिंदी में अध्ययन के लिए आयेंगे। भाषा को सीखने के लिए यहां से बेहतर कही और स्थान नहीं हो सकता है, का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि दिल्ली या अन्य शहरों में विदेशी जानकर वे अंग्रेजी में बोलने लगते हैं पर यहां का वातावरण ही हिंदी है, इससे विदेशी विद्यार्थी हिंदी बहुत जल्दी सीख सकते हैं।

समारोह का संचालन भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय ने किया तथा प्रतिकुलपति प्रो.ए.अरविंदाक्षन ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, प्रो. रामशरण जोशी, प्रो.के.के. सिंह, प्रो. अनिल के.राय 'अंकित', प्रो. रवि चतुर्वेदी सहित विवि के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मी, शोधार्थी व विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

-अमित कुमार विश्वास